# अध्याय 13 एक कहानी यह भी

- मन्नू भंडारी

## कवि परिचय

**जन्म-** सन 1931 में (मध्य प्रदेश के जिला - मंदसौर, गाँव - भानपुरा)

**कहानी संग्रह-** एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, यही सच है, त्रिशंकु

**उपन्यास-** आपका बंटी , महाभोज

**आत्मकथ्य-** एक कहानी यह भी

**सम्मान-** हिंदी अकादमी शिखर सम्मान, भारतीय भाषा परिषद कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार

## पाठ- परिचय

एक कहानी यह भी मन्नू भंडारी द्वारा आत्मपरक शैली में लिखी हुई आत्मकथ्य है। उन्होंने कोई सिलसिलेवार आत्मकथा नहीं लिखी है,अपने आत्मकथ्य में उन व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में लिखा है जो उनके लेखकीय जीवन से जुड़े हुए हैं।

इस पाठ में यह बात बड़े ही प्रभावशाली ढंग से दर्शाई गई है कि पहले लड़कियों को किस तरह की पाबंदियों का सामना करना पड़ता है।संकलित अंश में मन्नू जी के जीवन से जुड़ी घटनाओं के साथ उनके पिताजी और उनकी कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का व्यक्तित्व विशेष रूप से उभर कर आया है जिन्होंने आगे चलकर उनके लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेखिका ने बड़े रोचक ढंग से एक साधारण लड़की के असाधारण बनने की प्रारंभिक पड़ावों का वर्णन किया है। सन '46-47' की आंधी से मन्नू जी भी अछूती नहीं रही । छोटे शहर से होते हुए भी उन्होंने आजादी की लड़ाई में भागीदारी की, उसमें उसका उत्साह, ओज, संगठन - क्षमता और विरोध करने का तरीका देखते ही बनता है।

## पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

**1• लेखिका के व्यक्तित्व पर मुख्य रूप से किन लोगों का प्रभाव पड़ा?**

उत्तर - लेखिका के व्यक्तित्व पर मुख्य रूप से 2 लोगों का प्रभाव पड़ा-

**पिता का प्रभाव-** लेखिका के व्यक्तित्व पर उसके पिता का नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों रूपों में प्रभाव पड़ा। लेखिका की तुलना उनसे दो साल बड़ी बहन सुशीला से करने के कारण उनके मन में हीन भावना घर कर गई । इसके अतिरिक्त उन्होंने लेखिका को राजनैतिक परिस्थितियों से अवगत कराया।

प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का प्रभाव- प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका की साहित्यिक समझ का दायरा बढ़ाया और अच्छी पुस्तकों को चुनकर पढ़ने में मदद की। इसके अलावा उन्होंने लेखिका में साहस एवं आत्मविश्वास भर दिया जिसके फलस्वरूप भी वे स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने लगी।

**2• इस आत्मकथा में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?**

उत्तर- लेखिका के पिता का मानना था कि रसोई में काम करने के कारण लड़कियों की क्षमता और प्रतिभा नष्ट हो जाती है। वे पकाने - खाने तक ही सीमित होकर रह जाती हैं और अपनी प्रतिभा को निखार नहीं पाती हैं। प्रतिभा को भट्टी में झोंकने वाली जगह होने के कारण ही उन्होंने रसोई को 'भटियारखाना' कह कर संबोधित किया है।

**3• वह कौन सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को ना अपनी आंखों पर विश्वास हो पाया और ना अपने कानों पर?**

उत्तर- एक बार लेखिका के कॉलेज से पत्र आया कि आकर मिले और बताएं कि लेखिका की गतिविधियों के कारण उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों न की जाए? लेखिका के पिताजी क्रोध से भन्नाते हुए कॉलेज गए। वहां जाने पर पता चला कि सारे कॉलेज की लड़कियों पर लेखिका का बहुत रौब है। सारा कॉलेज उन तीन लड़कियों के इशारे पर चल रहा है। इस बात का पता चलते ही उनका मन लेखिका के प्रति गर्व से भर गया। आते वक्त उनके चेहरे पर खुशी थी पिता के इसी परिवर्तित व्यवहार को देखकर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर।

**4• लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तर- लेखिका की प्रायः अपने पिता से वैचारिक टकराहट होती रहती थी । पिता लेखिका को देश - समाज के प्रति जागरूक बनाना चाहते थे किंतु उसे घर तक ही सीमित रखना चाहते थे। वे उसके मन में विद्रोह और जागरण के स्वर भरना चाहते थे किंतु उसे सक्रिय नहीं होने देना चाहते थे लेकिन लेखिका के मन में युवा उन्माद था इसलिए घर की सीमा में रहना लेखिका के लिए मुश्किल हो गया था। वे देश की स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग ले रही थी। यहीं दोनों में टक्कर होती थी। विवाह के मामले में भी दोनों के विचार टकराए ।पिता नहीं चाहते थे कि लेखिका अपनी पसंद से राजेंद्र यादव से शादी करें परंतु लेखिका ने उनकी परवाह नहीं की ।

**5• इस आत्मकथा के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।**

उत्तर- सन् 1946- 47 का समय स्वतंत्रता आंदोलन का समय था। हर तरफ हड़तालें प्रभात फेरियाँ जुलूस और नारेबाजी हो रही थी।घर में पिता और उनके साथियों के साथ होने वाली गोष्ठियों और गतिविधियों ने लेखिका को भी जागरूक कर दिया था। प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से जोड़ दिया।जब देश में नियम कानून और मर्यादाएँ टूटने लगी तब पिता की नाराजगी के बाद भी उन्होंने पूरे उत्साह के साथ आंदोलन में भाग लिया। उनका उत्साह ,संगठन क्षमता और विरोध करने का तरीका देखते ही बनता था। वे चौराहों पर

बेझिझक भाषण नारेबाजी और हड़तालें करने लगीं । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी सक्रिय भूमिका रही।

## अति संक्षिप्त प्रश्न

**1• मन्नू भंडारी का जन्म कब हुआ?**

उत्तर- सन् 1931

**2• मन्नू भंडारी के दो उपन्यासों के नाम लिखें।**

उत्तर- आपका बंटी ,महाभोज

**3• मन्नू भंडारी के एक कहानी संग्रह का नाम लिखें।**

उत्तर- त्रिशंकु

**4• मन्नू भंडारी को कौन-कौन से पुरस्कार मिले हैं?**

उत्तर- हिंदी अकादमी के शिखर सम्मान, भारतीय भाषा परिषद् कोलकाता, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार आदि ।

**5• एक कहानी यह भी पाठ के माध्यम से बताइए कि लेखिका की दो साल बड़ी बहन का क्या नाम था?**

उत्तर- सुशीला

**6• जैनेंद्र का कौन सा उपन्यास लेखिका को पसंद आया था?**

उत्तर- सुनीता

**7• लेखिका और उनके पिता के बीच टकराव का क्या कारण था?**

उत्तर- विचारों की भिन्नता

**8• डॉक्टर साहब का क्या नाम था?**

उत्तर- डॉक्टर अंबालाल

**9• डॉक्टर साहब कौन थे?**

उत्तर - लेखिका के पिता के मित्र

**10• लेखिका के मन में कौन सी हीन भावना ग्रंथि बन गई थी?**

उत्तर- काले रंग की होना

## लघु उत्तरीय प्रश्न

**1. सन् 1946-47 में भारत के वातावरण का वर्णन करें।**

उत्तर- सन् 1946-47 में भारत का वातावरण पूरे दमखम एवं जोश खरोश से भरपूर था। प्रभात फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस ,भाषण हर शहर का चरित्र था और इन सब से जुड़ना हर युवा का उन्माद। युवकों का खून लावा बन चुका था। आंदोलन में भाग लेने के लिए युवकों के साथ-साथ युवतियाँ भी निर्भीक थीं।

**2• आसन्न अतीत से क्या तात्पर्य है? वहां किस प्रकार जड़ जमाए रहता है?**

उत्तर- आसन्न अतीत का तात्पर्य है - अभी-अभी बीता हुआ हमारा समय। हमारा यही बीता हुआ समय हमारे संस्कारों में बस जाता है। वह हमारी आदतों में शामिल हो जाता है और हम वैसे ही बन जाते हैं जैसा हमारे साथ घटित होता है। जैसे लेखक के पिताजी के शक्की स्वभाव की झलक उनमें भी दिखाई देती है।

**3• लेखिका मन्नू भंडारी की कहानियों के अधिकांश पात्र कहां के थे? इससे किस तथ्य का बोध होता है?**

उत्तर- लेखिका मन्नू भंडारी की कहानियों के अधिकांश पात्र उनके मोहल्ले के थे। इससे पड़ोस के लोगों के साथ उनका संबंध दिखाई देता है। उस जमाने में पूरा मोहल्ला अपने घर के समान ही था, मोहल्ले के अधिकांश घर तो परिवार का हिस्सा ही थे।

**4• मन्नू भंडारी ने अपने पिताजी के इंदौर के दिनों के बारे क्या जानकारी दी है?**

उत्तर - मन्नू भंडारी ने अपने पिताजी के बारे में इंदौर के दिनों की जानकारी देते हुए कहा कि वहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ-साथ वो समाज -सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे। शिक्षा के वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन दिनों आठ - आठ ,दस -दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया है जिनमें से कई तो बाद में ऊँचे- ऊँचे ओहदों पर पहुंचे।

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

**1• भंडारी ने अपनी माँ के किन गुणों की चर्चा अपनी आत्मकथा में की है ?**

उत्तर- मन्नू भंडारी की माँ के अन्दर धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी। वे पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित - अनुचित फरमाइश और जिद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थी। उन्होंने जिंदगी भर अपने लिए कुछ नहीं माँगा और न कुछ चाहा । मन्नू भंडारी ने अपनी माँ की इन्हीं त्याग,सहिष्णुता एवं सहनशील आदि गुणों की चर्चा अपने आत्मकथा में की है।

**2• लेखिका के व्यक्तित्व निर्माण में उसकी परिस्थितियों का क्या योगदान है?**

उत्तर- लेखिका के व्यक्तित्व निर्माण में उसकी परिस्थितियों का बहुत बड़ा योगदान है। लेखिका के घर में आए दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे और जमकर बहसें होती थीं।क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण उनकी कुर्बानियों से लेखिका का मन आक्रांत रहने लगा।लेखिका के पिताजी ने उन्हें रसोई से दूर रखकर जागरूक नारी बनने के लिए प्रेरित किया। लेखिका के पिताजी विद्वान लेखक थे वे सदा पुस्तकों से घिरे रहते थे। पुस्तकों , पत्रिकाओं और अखबारों के बीच पढ़ते रहते थे। इससे लेखिका में साहित्य के प्रति रुचि बढ़ी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उनमें घरेलू परिस्थितियों के कारण ही उनके मन में साहित्य के प्रति अभिरुचि बढ़ी एवं राष्ट्रीय आंदोलन में उन्होंने बढ़- चढ़कर भाग लिया।

**3• मनुष्य के जीवन में आस - पड़ोस का बहुत महत्व होता है। परन्तु महानगरों में रहने वाले लोग प्राय: पड़ोस कल्चर से वंचित रह जाते है। इस बारे में अपने विचार लिखें।**

उत्तर - पड़ोस कल्चर हमें अधिक सुरक्षा और अपनत्व प्रदान करती है। हमारा जीवन सामाजिक बना रहता है। बचपन में लेखिका सम्पूर्ण मुहल्ले को अपना घर मानती थी। लेकिन आज हमारे बीच फ्लैट कल्चर का इतना विस्तार हो रहा

है कि हमारा जीवन फ्लैट में सिमट कर रह गया है। आज नगरों और महानगरों में पड़ोस - संस्कृति खत्म होती जा रही है। हमारा जीवन पिंजड़े में सिमट कर रह गया है। हमें बगल में रहने वालों से कोई संबंध नहीं रह गया है । सुख दुख में कोई साथी नहीं पूरा जीवन एकाकी व्यतीत करना पड़ रहा है इससे मानवीय एवं सामाजिक संवेदना लुप्त होती जा रही है।

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**1· मन्नू भंडारी का बचपन कहां बीता था?**

क· कोलकाता ख· जयपुर
ग· कानपुर घ· अजमेर

उत्तर- घ· अजमेर

**2· मन्नू भंडारी की हिंदी प्राध्यापिका का क्या नाम था?**

क· शीला अग्रवाल ख· मनीषा यादव
ग· शालिनी गुप्ता घ· ज्योति गोयल

उत्तर- क· शीला अग्रवाल

**3· लेखिका की मां का स्वभाव कैसा था?**

क· त्यागशील ख· लालची
ग· क्रोधी। घ· लड़ाई करने वाला

उत्तर- क· त्यागशील

**4· लेखिका के पिता लेखिका को घर में होने वाली बहसों में बैठने को क्यों कहते थे?**

क· वे उसे बहस करना सिखाना चाहते थे
ख· वे उसे देश की स्थिति से परिचित कराना चाहते थे
ग· औपचारिकता वश बैठने को कहते थे
घ· लेखिका की इच्छा के कारण

उत्तर- ख· वे उसे देश की स्थिति से परिचित कराना चाहते थे।

**5· सन् 46-47 के दिनों में देश का माहौल कैसा था?**

क· देश में युद्ध की स्थिति बनी हुई थी।
ख· स्वतंत्रता की तैयारी चल रही थी।
ग· देश को स्वतंत्र कराने का जोश उफान पर था।
घ· संविधान तैयार किया जा रहा था।

उत्तर- ग· देश को स्वतंत्र कराने का जोश उफान पर था।

**6· लेखिका के पिता शक्की स्वभाव के क्यों थे?**

क· चिंता के कारण
ख· गरीबी कारण
ग· अपनों के विश्वासघात के कारण
घ· इनमें से कोई नहीं

उत्तर- ग· अपनों के विश्वासघात के कारण

**7· किसकी जोशीली बातों ने लेखिका के रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया?**

क· महात्मा गाँधी की ख· पिता की
ग· शीला अग्रवाल की घ· क्रांतिकारियोंकी

उत्तर- ग· शीला अग्रवाल की

**8· लेखिका के पिता ने उसका रौब देखकर क्या अनुभव किया ?**

क· प्रसन्नता। ख· गर्व
ग· क्रोध घ· चिंता

उत्तर - ख·गर्व

**9 · इस लेख में लेखिका का कौन सा व्यक्तित्व सामने आया है ?**

क· गुस्सैल ख· उदंड
ग· शर्मीला घ· स्वतंत्रता सेनानी

उत्तर - घ· स्वतंत्रता सेनानी

**10· लेखिका के किस व्यवहार से तंग आकर प्रिंसिपल ने लेखिका के पिता को बुलवाया ?**

क· आंदोलनकारी ख· बिगडैल
ग· झगड़ालू। घ· अशिष्ट

उत्तर- क· आंदोलनकारी